



12078CH05

पञ्चमः पाठः

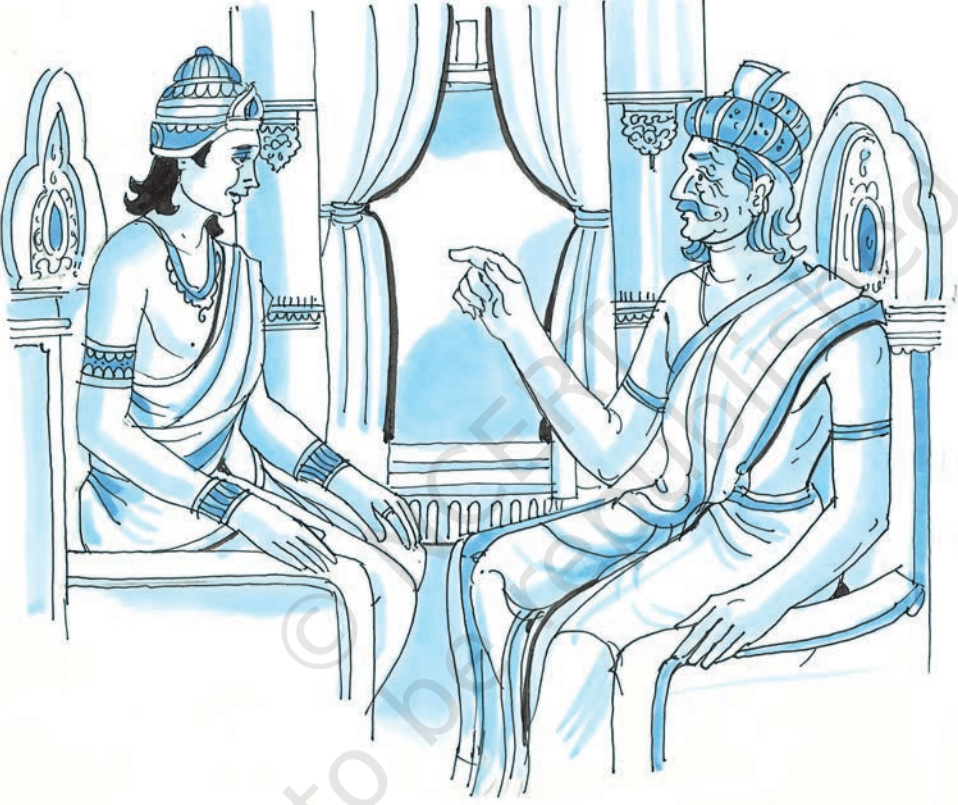
## शुकनासोपदेशः

महाकवि बाणभट्ट संस्कृत के सर्वाधिक प्रतिभाशाली गद्यकार हैं। इन्होंने कान्यकुब्ज (कन्नौज) के राजा हर्षवर्धन के जीवन पर 'हर्षचरित' लिखा है। हर्षवर्द्धन का राज्यकाल 606 ई. से 648 ई. तक रहा। अतः बाणभट्ट का भी यही समय होना चाहिये। इनकी दो रचनाएँ सुप्रसिद्ध हैं— हर्षचरित और कादम्बरी।

हर्षचरित बाणभट्ट की प्रथम गद्य कृति है। स्वयं बाणभट्ट ने इसे आख्यायिका कहा है। कादम्बरी संस्कृत साहित्य का सर्वोत्कृष्ट गद्य काव्य है। यह 'कथा' श्रेणी का काव्य है। चन्द्रापीड-कादम्बरी तथा पुण्डरीक-महाश्वेता के प्रणय का चित्रण करने वाली कथा 'कादम्बरी' के दो भाग हैं। इसका कथानक जटिल होते हुए भी मनोरम है। इसमें कथा का प्रारम्भ राजा शूद्रक के वर्णन से होता है। शूद्रक के यहाँ चाण्डालकन्या वैशम्पायन नामक शुक को लेकर पहुँचती है। शुक सभा में आत्म-वृत्तान्त सुनाता है। इस ग्रन्थ में तीन-तीन जन्मों की घटनाएँ गुम्फित हैं।

प्रस्तुत पाठ 'कादम्बरी' के शुकनासोपदेशः नामक गद्यांश से लिया गया है। इस अंश का नायक राजकुमार चन्द्रापीड है, जो सत्व, शौर्य और आर्जव भावों से युक्त है। शुकनास एक अनुभवी मन्त्री हैं जो राजकुमार चन्द्रापीड को राज्याभिषेक के पूर्व वात्सल्यभाव से उपदेश देते हैं। वे उसे युवावस्था में सुलभ रूप, यौवन, प्रभुता एवं ऐश्वर्य से उद्भूत दोषों के विषय में सावधान कर देना उचित समझते हैं। इसे युवावस्था में प्रवेश कर रहे समस्त युवकों को प्रदत्त 'दीक्षान्त भाषण' कहा जा सकता है।

एवं समतिक्रामत्सु दिवसेषु राजा चन्द्रापीडस्य यौवराज्याभिषेकं चिकीर्षुः प्रतीहारानुपकरण- सम्भारसंङ्ग्रहार्थमादिदेश। समुपस्थितयौवराज्याभिषेकं च तं कदाचिद् दर्शनार्थमागतमारूढविनयमपि विनीततरमिच्छन् कर्तुं शुकनासः सविस्तरमुवाच-



“तात! चन्द्रापीड! विदितवेदितव्यस्याधीतसर्वशास्त्रस्य ते नाल्पमप्युपदेष्टव्यमस्ति। केवलं च निसर्गत एवातिगहनं तमो यौवनप्रभवम्। अपरिणामोपशमो दारुणो लक्ष्मीमदः। अप्रबोधा घोरा च राज्यसुखसन्निपातनिद्रा भवति, इत्यतः विस्तरेणाभिधीयसे।

गर्भे श्वरत्वमभिनवयौवनत्वम्, अप्रतिमरूपत्वममानुषशक्तित्वञ्चेति महतीयं खल्वनर्थ- परम्परा। यौवनारम्भे च प्रायः शास्त्रजलप्रक्षालन-निर्मलापि कालुष्यमुपयाति बुद्धिः। नाशयति च पुरुषमत्यासङ्गो विषयेषु।

भवादृशा एव भवन्ति भाजनान्युपदेशानाम्। अपगतमले हि मनसि विशन्ति सुखेनोपदेशगुणाः। हरति अतिमलिनमपि दोषजातं गुरूपदेशः गुरूपदेशश्च नाम अखिलमलप्रक्षालनक्षमम् अजलं स्नानम्। विशेषेण तु राज्ञाम्। विरला हि तेषामुपदेष्टारः। राजवचनमनुगच्छति जनो भयात्। उपदिश्यमानमपि ते न शृण्वन्ति। अवधीरयन्तः खेदयन्ति हितोपदेशदायिनो गुरून्।

आलोकयतु तावत् कल्याणाभिनिवेशी लक्ष्मीमेव प्रथमम्। न ह्येवं विधमपरिचितमिह जगति किञ्चिदस्ति यथेयमनार्या। लब्धापि खलु दुःखेन परिपाल्यते। परिपालितापि प्रपलायते। न परिचयं रक्षति। नाभिजनमीक्षते। न रूपमालोकयते। न कुलक्रममनुवर्तते। न शीलं पश्यति। न वैदग्ध्यं गणयति। न श्रुतमाकर्णयति। न धर्ममनुरुध्यते। न त्यागमाद्रियते। न विशेषज्ञतां विचारयति। नाचारं पालयति। न सत्यमवबुध्यते। पश्यत एव नश्यति। सरस्वतीपरिगृहीतं नालिङ्गति जनम्। गुणवन्तं न स्पृशति। सुजनं न पश्यति। शूरं कण्टकमिव परिहरति। दातारं दुःस्वप्नमिव न स्मरति। विनीतं नोपसर्पति। तृष्णां संवर्धयति। लघिमानमापादयति। एवं विधयापि चानया कथमपि दैववशेन परिगृहीताः विक्लवाः भवन्ति राजानः, सर्वाविनयाधिष्ठानतां च गच्छन्ति।

अपरे तु स्वार्थनिष्पादनपरैः दोषानपि गुणपक्षमध्यारोपयद्भिः प्रतारणकुशलैर्धूर्तैः प्रतार्यमाणा वित्तमदमत्तचित्ता सर्वजनोपहास्यतामुपयान्ति। न मानयन्ति मान्यान्, जरावैक्लव्यप्रलपितमिति पश्यन्ति वृद्धोपदेशम्। कुप्यन्ति हितवादिने। सर्वथा तमभिनन्दन्ति, तं संवर्धयन्ति, तस्य वचनं शृण्वन्ति, तं बहु मन्यन्ते योऽहर्निशम् अनवरतं विगतान्यकर्त्तव्यः स्तौति, यो वा माहात्म्यमुद्गावयति।

तदतिकुटिलचेष्टादारुणे राज्यतन्त्रे, अस्मिन् महामोहकारिणि च यौवने कुमार! तथा प्रयतेथाः यथा नोपहस्यसे जनैः, न निन्द्यसे साधुभिः, न धिक्क्रयसे गुरुभिः, नोपालभ्यसे सुहृद्भिः, न वञ्च्यसे धूर्तैः, न विडम्ब्यसे लक्ष्म्या, नाक्षिप्यसे विषयैः, नापह्रियसे सुखेन।

इदमेव च पुनः पुनरभिधीयसे-विद्वांसमपि सचेतसमपि, महासत्त्वमपि, अभिजातमपि, धीरमपि, प्रयत्नवन्तमपि पुरुषं दुर्विनीता खलीकरोति लक्ष्मीरित्येता-वदभिधायोपशशाम।

चन्द्रापीडस्ताभिरुपदेशवाग्भिः प्रक्षालित इव, उन्मीलित इव, स्वच्छीकृत इव, पवित्रीकृत इव, उद्भासित इव, प्रीतहृदयो स्वभवनमाजगाम।

### शब्दार्थाः टिप्पण्यश्च

|                          |   |   |
|--------------------------|---|---|
| चिकीर्षुः                | – | करने की इच्छावाला, कर्तुमिच्छुः, कृ + सन् + उ + प्रथमा विभक्ति एकवचन।   |
| विनय                     | – | विशिष्ट नय (नीति)   |
| प्रतीहारान्              | – | द्वारपालों को   |
| उपकरणसम्भारसङ्ग्रहार्थम् | – | आवश्यक सामग्री-समूह के संग्रह के लिए, उपक्रियन्ते एभिः इति उपकरणानि, उपकरणानाम् सम्भारः = उपकरणसम्भारः (षष्ठी तत्पुरुष) उपकरणसम्भारस्य सङ्ग्रहार्थम्। उप + कृ + ल्युट् = उपकरणम्, सम्भारः = सम् + भृ + घञ्। |
| निसर्गतः                 | – | स्वाभाविक रूप से।   |
| अपरिणामोपशमः             | – | वृद्धावस्था में भी न शान्त होने वाला। परिणामे उपशमः परिणामोपशमः। न परिणामोपशमः अपरिणामोपशमः (नञ् तत्पुरुष)।   |
| विदितवेदितव्यस्य         | – | विदितम् वेदितव्यम् येन असौ विदितवेदितव्यः तस्य (बहुव्रीहि), विद् + क्त = विदितम्, विद् + तव्यत् = वेदितव्यम्।   |
| गर्भेश्वरत्वम्           | – | जन्म से प्राप्त प्रभुत्व। गर्भतः एव ईश्वरः = गर्भेश्वरः तस्य भावः गर्भेश्वरत्वम्।   |
| भवादृशा                  | – | आप जैसे ही, भवत् + दृश् + क्तिप्, प्रथमा विभक्ति।   |
| अपगतमले                  | – | दोषरहित होने पर, अपगतः मलः यस्मात् तत् अपगतमलम् तस्मिन् अपगतमले (पञ्चमी तत्पुरुष)   |
| उपदेष्टारः               | – | उपदेश देने वाले, उप + दिश् + तृच् प्रथमा विभक्ति बहुवचन।  |
| अवधीरयन्तः               | – | तिरस्कृत करते हुए, अव + धीर + णिच् + शतृ प्रथमा विभक्ति बहुवचन।   |
| कल्याणाभिनिवेशी          | – | मङ्गल के अभिलाषी, कल्याणे अभिनिवेशुं शीलं यस्य स बहुव्रीहि।   |

|                      |   |   |
|----------------------|---|---|
| परिपाल्यते           | – | रखी जा सकती है, परि + पाल + कर्मणि यक् लट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन।  |
| प्रपलायते            | – | भाग जाती है।  |
| वैदग्ध्यम्           | – | पाण्डित्य को, विदग्धस्य भावो वैदग्ध्यम्, विदग्ध + घ्यञ्।  |
| अनुरुध्यते           | – | अनुरोध करती है, अनु + रुध् + लट्, प्रथम पुरुष एकवचन।  |
| अवबुध्यते            | – | जान जाती है।  |
| नोपसर्पति            | – | समीप नहीं जाती, पार्श्वे न गच्छति।  |
| संवर्धयति            | – | बढ़ाती है।  |
| लघिमानमापादयति       | – | निम्नता प्रदान करती है, लघिमानम् = लघोर्भावः लघिमा (लघु + इमनिच्) तम् आपादयति = आ + पद् + णिच् + लट् प्रथम पुरुष एकवचन। |
| विकलवाः              | – | विह्वल-विकल।  |
| अध्यारोपयद्भिः       | – | आरोपित करने वाले।   |
| प्रतारणकुशलैः        | – | ठगने में कुशल-निपुण, प्रतारणासु कुशलाः प्रतारणकुशलाः तैः, सप्तमी तत्पुरुष।  |
| प्रतार्यमाणाः        | – | ठगे गये, प्र + तृ + कर्मणि यक् + शानच् + प्रथमा विभक्ति एकवचन।  |
| जरावैक्लव्यप्रलपितम् | – | वृद्धावस्था की विकलता से निरर्थक वचन के रूप में, जरसः वैक्लव्यं = जरावैक्लव्यम् (षष्ठी तत्पुरुष) तेन प्रलपितम्।         |
| प्रयतेथाः            | – | प्रयत्न करिये। प्र + यत् + लिङ्, मध्यम पुरुष एकवचन।   |
| अभिजातम्             | – | कुलीन को, अभि + जन् + क्त, द्वितीया विभक्ति एकवचन। प्रशस्तं जातं यस्य स अभिजातः तम् अभिजातम्, बहुव्रीहि समास।           |
| अभिधीयसे             | – | कहा जा रहा है अभि + धा + यक् + लट्, मध्यम पुरुष एकवचन।  |
| खलीकरोति             | – | दुष्ट बना देती है। न खलम् अखलं, अखलं खलं करोति इति, खल + च्वि + कृ + लट्, प्रथम पुरुष एकवचन।                            |
| उपशशाम               | – | चुप हो गये, उप + शम् + लिट्, प्रथम पुरुष एकवचन।   |

- प्रक्षालित इव – पूर्णतया धोये हुए। प्र + क्षाल + क्त, प्रथम पुरुष एकवचन।
- अहर्निशम् – दिन-रात।
- उद्भावयति – प्रकट करता है। उद् + भू + णिच् + लट्, प्रथम पुरुष एकवचन।
- नोपालभ्यसे – उलाहना न दिये जाओ।
- नोपहस्यसे जनैः – लोगों के द्वारा उपहास के पात्र न बनो, उप + हस् + यक् + लट्, मध्यम पुरुष एकवचन, यहाँ 'उपहस्यसे' क्रिया में कर्मणि यक् प्रत्यय हुआ है। अतः 'जनाः' कर्ता के अनुक्त होने से अनुक्त कर्ता 'कर्तृकर्मणोस्तृतीया' से तृतीया विभक्ति हो गयी है।

### अभ्यासः

#### 1. संस्कृतेन उत्तरं दीयताम् ।

- (क) लक्ष्मीमदः कीदृशः?
- (ख) चन्द्रापीडं कः उपदिशति?
- (ग) अनर्थपरम्परायाः किं कारणम्?
- (घ) कीदृशे मनसि उपदेशगुणाः प्रविशन्ति?
- (ङ) लब्धापि दुःखेन का परिपाल्यते?
- (च) केषाम् उपदेष्टारः विरलाः सन्ति?
- (छ) लक्ष्म्या परिगृहीताः राजानः कीदृशाः भवन्ति?
- (ज) वृद्धोपदेशं ते राजानः किमिति पश्यन्ति?

#### 2. विशेषणानि विशेष्यैः सह योजयत ।

| विशेषणम्           | विशेष्यम्  |
|--------------------|------------|
| (क) समतिक्रामत्सु  | ते         |
| (ख) अधीतशास्त्रस्य | विद्वांसम् |
| (ग) दारुणो         | दिवसेषु    |

|               |             |
|---------------|-------------|
| (घ) गहनं तमः  | दोषजातम्    |
| (ङ) अतिमलिनम् | लक्ष्मीमदः  |
| (च) सचेतसम्   | यौवनप्रभवम् |

3. अधोलिखितपदानि स्वरचित-संस्कृत-वाक्येषु प्रयुङ्ध्वम् ।  
सङ्ग्रहार्थम्, समुपस्थितम्, विनयम्, परिणमयति, शृण्वन्ति, स्पृशति।

4. अधोलिखितानां पदानां सन्धि-विच्छेदं कुरुत ।

|                    |       |   |       |
|--------------------|-------|---|-------|
| (क) एवातिगहनम्     | ..... | + | ..... |
| (ख) गर्भेश्वरत्वम् | ..... | + | ..... |
| (ग) गुरुपदेशः      | ..... | + | ..... |
| (घ) ह्येवम्        | ..... | + | ..... |
| (ङ) नाभिजनम्       | ..... | + | ..... |
| (च) नोपसर्पति      | ..... | + | ..... |

5. प्रकृति-प्रत्ययविभागः क्रियताम् ।

| शब्दः            | प्रकृतिः | प्रत्ययः |
|------------------|----------|----------|
| (क) चिकीर्षुः    | .....    | .....    |
| (ख) उपदेष्टव्यम् | .....    | .....    |
| (ग) ईक्षते       | .....    | .....    |
| (घ) बुध्यते      | .....    | .....    |
| (ङ) निन्द्यसे    | .....    | .....    |
| (च) उपशशाम       | .....    | .....    |

6. समासविग्रहं कुरुत ।

|                      |   |       |
|----------------------|---|-------|
| (क) अमानुषशक्तित्वम् | - | ..... |
| (ख) अत्यासङ्गः       | - | ..... |
| (ग) अनार्या          | - | ..... |

- (घ) स्वार्थनिष्पादनपरैः - .....
- (ङ) अहर्निशम् - .....
- (च) वृद्धोपदेशम् - .....

### 7. रिक्तस्थानानि पूरयत ।

- (क) लक्ष्मीः ..... न रक्षति।
- (ख) ..... दुःस्वप्नमिव न स्मरति।
- (ग) सरस्वतीपरिगृहीतं ..... ।
- (घ) उपदिश्यमानमपि ..... न शृण्वन्ति।
- (ङ) अवधीरयन्तः ..... हितोपदेशदायिनो गुरुन्।
- (च) तथा प्रयतेथाः ..... नोपहस्यसे जनैः।
- (छ) चन्द्रापीडः प्रीतहृदयो ..... आजगाम।

### 8. सप्रसङ्गं हिन्दीभाषया व्याख्या कार्या ।

- (क) गर्भेश्वरत्वमभिनवयौवनत्वमप्रतिमरूपत्वममानुषशक्तित्वञ्चेति महतीयं खल्वनर्थपरम्परा।
- (ख) हरति अतिमलिनमपि दोषजातं गुरुपदेशः।
- (ग) विद्वांसमपि सचेतसमपि, महासत्त्वमपि, अभिजातमपि, धीरमपि, प्रयत्नवन्तमपि पुरुषं दुर्विनीता खलीकरोति लक्ष्मीरिति।

### योग्यताविस्तारः

‘उप’ उपसर्गपूर्वकात् अतिसर्जनार्थकात् ‘दिश्’ धातोः ‘घञ्’ प्रत्यये उपदेशशब्दः निष्पद्यते। समुचितकार्येषु मित्रं, बन्धुं, आश्रितजनं, विद्यार्थिनं वा सन्मार्गे प्रवर्तयितुं केनचित् हितचिन्तकेन सुहृद्वरेण ज्ञानिना वा दीयमानः परामर्शः मार्गनिर्देशः हितवचनं वा ‘उपदेश’ इति उच्यते। संस्कृतवाङ्मये लोकप्रबोधकानि सदाचारप्रतिपादकानि च सूत्राणि नाना-ग्रन्थेषु, काव्येषु सुभाषितेषु च समुपलभ्यन्ते। तानि उपदेशसूत्राणि बालकान्, युवकान्, प्रौढान्, वृद्धान् विविधेषु क्षेत्रेषु कार्याणि कुर्वतः च अधिकृत्य सामान्येन प्रकारेण प्रणीतानि सन्ति।



अत्र उद्धृते भागे शुकनासोपदेशाख्ये राजकुमारं चन्द्रापीडं प्रति शुकनासस्य उपदेशः सङ्गृहीतः। तथाहि-ऐश्वर्यं, यौवनं, सौन्दर्यं, शक्तिश्चेति प्रत्येकं अनर्थकारणमिति मत्वा चन्द्रापीडम् उपदेष्टुं प्रक्रान्तः शुकनासः। यद्यपि चन्द्रापीडः विनीतः गृहीतविद्यश्च तथापि ऐश्वर्यादिभिः अस्य मनः खलीकृतं न भवेत् इति धिया शुकनासः चन्द्रापीडम् उपदिशति। अतः उपदेशोऽयं न केवलं चन्द्रापीडं प्रति अपितु तन्माध्यमेन सर्वेषां जनानां कृतेऽपि।

पञ्चतन्त्रेऽपि यत्र-तत्र ईदृश एव हृदयङ्गमः उपदेशः प्राप्यते। यौवनादिकारणैः सम्भाव्यमानमनर्थं पञ्चतन्त्रम् एवमुल्लिखति-

यौवनं धनसम्पत्तिः प्रभुत्वमविवेकिता।  
एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम्॥

महाभारतस्य उद्योगपर्वणः भागे विदुरनीतौ अपि एवमभिहितमस्ति-

अष्टौ गुणाः पुरुषं दीपयन्ति  
प्रज्ञा च कौल्यं च दमः श्रुतं च।  
पराक्रमश्चाबहुभाषिता च  
दानं यथाशक्ति कृतज्ञता च॥  
न क्रोधिनोऽर्थो न नृशंसमित्रं  
क्रूरस्य न स्त्री सुखिनो न विद्या।  
न कामिनो ह्रीरलसस्य न श्रीः  
सर्वं तु न स्यादनवस्थितस्य॥

अन्यत्रापि हितोपदेश-नीतिशतकादौ च एवमुपदिष्टम् अस्ति। तत्र-तत्रापि योग्यता विस्तरार्थमवश्यं पठनीयम्।

1. बाणभट्टस्य रीतिः पाञ्चाली रीतिरिति कथ्यते। तस्याः लक्षणम् “शब्दार्थयोः समो गुम्फः पाञ्चालीरीतिरिष्यते”।
2. बाणभट्टस्य गद्ये या लयात्मकता वर्तते, पाठपुरस्सरं तस्याः सन्धानं कार्यम्।

बाणविषयकसूक्तयः प्रशस्तयश्च

1. बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्।
2. केवलोऽपि स्फुरन् बाणः करोति विमदान् कवीन्।  
किं पुनः क्लृप्तसन्धानः पुलिन्दकृतसन्निधिः॥ (धनपाल-तिलकमञ्जरी)

3. सुबन्धुर्बाणभट्टश्च कविराज इतित्रयः।  
वक्रोक्तिमार्गनिपुणाश्चतुर्थो विद्यते न वा॥ (मङ्खक-श्रीकण्ठचरित)
4. श्लेषे केचन शब्दगुम्फविषये केचिद्रसे चापरेऽ-  
लङ्कारे कतिचित्सदर्थविषये चान्ये कथावर्णने।  
आः सर्वत्र गभीरधीरकविताविन्ध्याटवी चातुरी-  
सञ्चारी कविकुम्भिकुम्भभिदुरां बाणस्तु पञ्चाननः॥ (चन्द्रदेव-शार्ङ्गधरपद्धति)
5. शब्दार्थयोः समो गुम्फः पाञ्चालीरीतिरिष्यते।  
शीलाभट्टारिकावाचि बाणोक्तिषु च सा यदि॥ (राजशेखर-जल्हण-सूक्तिमुक्तावली)
6. रुचिरस्वरवर्णपदा रसभावती जगन्मनो हरति।  
सा किं तरुणी? नहि नहि वाणी बाणस्य मधुरशीलस्य॥ (धर्मदास-विदग्धमुखमण्डन)
7. बाणः कवीनामिह चक्रवर्ती चकास्ति यस्योज्ज्वलवर्णशोभम्।  
एकातपत्रं भुवि पुण्यभूमिवंशाश्रयं हर्षचरित्रमेव॥ (सोड्ढल)
8. हृदि लग्नेन बाणेन यन्मन्दोऽपि पदक्रमः।  
भवेत्कविकुरङ्गाणां चापलं तत्र कारणम्॥ (त्रिलोचन-शार्ङ्गधरपद्धतिः)
9. यस्याश्चौरश्चिकुरनिकरः कर्णपूरो मयूरो  
भासो हासः कविकुलगुरुः कालिदासो विलासः।  
हर्षो हर्षो हृदयवसतिः पञ्चबाणस्तु बाणः  
केषां नैषा कथय कविताकामिनी कौतुकाय॥ (जयदेवः प्रसन्नराघवः)

